International Peace Day को क्यों मनाया जाता है |

हर साल International Peace Day को 21 सितंबर दुनिया भर में मनाया जाता है | संयुक्त राष्ट्रीय महासभा ने सभी देशों और देश के भीतर लोगों के बीच शांति के आदर्शों को मजबूत बनाने के लिए इस International Peace Day के दिन मनाने की घोषणा की है |

शांति का संदेश दुनिया के कोने कोने में पहुंचाने के लिए संयुक्त राष्ट्रीय ने कला और साहित्य और सिनेमा और संगीत और खेल जगत के विश्व विख्यात हस्तियों को शांतिदूत के रूप में भी नियुक्त कर रखा है |

जैसा कि हम आजकल देखते हैं की वर्तमान समय में शांति के ऊपर सेमिनार लेना एक फैशन सा बन गया है , इसके लिए लोग अलग - अलग तरह के प्रयोग करते हैं | जैसे शून्य पर ध्यान लगाना दोनों बाहों के बीच मैं ओम को देखने का प्रयास करना और उस पर ध्यान लगाना और कल्पना करना कि हमारे चारों और शांति है , लेकिन हम सभी अपने पिछले अनुभवों को जानते हैं कि एक बार इस तरह के कैंप या सेशन से बाहर होने पर हम फिर से उसी तनाव और बेचैनी की अवस्था में वापस आ जाते हैं और इससे यह दिखता है कि आमतौर पर लोग अशांत हैं , और दूसरा ऐसे लोगों की संख्या भी बढ़ रही है |

श्रीमद् भागवत के अनुसार स्वयं को भौतिक अस्तित्व के इस संसार के बचाने में अक्षम जीवात्मा बहुत उदास हो जाती है और दुखी जीवन व्यतीत करती है , यह 3 तरीके के होती है आदि ग्रैफिक और आदि भौतिक और अध्यात्मिक | आदि ग्रावीक अर्थात देवताओं के द्वारा उत्पन्न किया गया क्लेश जैसे सूखा भूचाल तथा तूफान | आदि भौतिक अर्थात अन्य जीवो द्वारा उत्पन्न क्लेश जैसे शत्रुओं के द्वारा उत्पन्न परेशानियां तथा अध्यात्मिक क्लेश जैसे अपने ही शरीर और मन द्वारा उत्पल क्लेश जैसे मानसिक तथा शारीरिक आस्थिरता या रोग या परेशानियां और इस प्रकार हम सदैव किसी ना किसी कारण से चिंताओं वह परेशानियों मैं गिरे रहते हैं |

इसीलिए हम देखते हैं कि भी पूजा या प्रार्थना के बाद इन 3 तरीकों से बचने हम 3 बार शांति शांति शांति का उच्चारण करते हैं |

कई बार ऐसा होता है हमारे चारों ओर तो शांति होती है लेकिन फिर भी हमारा मन इधर - उधर होता है , ऐसा इसलिए की बार हमारे स्थान हमारे स्थिति बदलने पर भी हम मन से उसी वस्तु और सोच और स्थिति से जुड़े हुए होते हैं , जो हमारी परेशानी का मुख्य कारण होती है |

इसके लिए भगवत गीता मैं भगवान अर्जुन से कहते हैं की यदि तुम अपने वास्तविक स्वरूप को जानकर कर्म करोगे तो युद्ध जैसे भयानक परिस्थिति में भी शांति के साथ अपना धर्म निभा सकोगे |

वर्तमान समय में भी अनेक देश कभी - कभी युद्ध जैसी परिस्थितियों में आ जाते हैं , चाहे अमेरिका हो या रूसो हो या चीन हो या भारत हो क्योंकि हम दावा करते हैं कि हम ही स्वामी है इसीलिए झगड़ा है मनमुटाव है असहमति है और ऐसी चेतना में शांति कैसे संभव है |

सबसे पहले हमें इस सत्य को स्वीकार करना होगा कि भगवान ही प्रत्येक वस्तु के स्वामी है , और हम सब यहां पर मेहमान है कुछ लगभग 100 वर्षों के लिए हम आते हैं जाते हैं और जब तक हम यहां रहते हैं तो इस विचार में रहे की यह मेरी जमीन है यह मेरा परिवार है यह मेरी संपत्ति है और इस और ध्यान तक नहीं देते कि परमेश्वर का आदेश आने पर इस घर को इस शरीर को इस संपत्ति को इस परिवार को और इस धन को बैंक बैलेंस इत्यादि सब कुछ को छोड़ना होगा |

और फिर मृत्यु के उपरांत कर्मों के अनुसार हमें दूसरा शरीर प्राप्त होता है , वह चाहे किसी अमेरिकन का हो या फिर भारतीय का या चाइनीस का या स्त्री का हो या पुरुष का है और चाहे फिर पशु या पक्षी का तो असलियत में देखें तो हम इन शरीरों के भी स्वामी नहीं जबकि हम इसका दावा करते हैं कि मैं यह शरीर हूं यह सब अज्ञानता के कारण है ऐसी अज्ञानता में हम शांति ढूंढते हैं |

शांति का प्रदर्शन करने वालों के दर्शन की उनके फिलोसोफी को समझते हुए एक दार्शनिक ने बहुत ही खूब कहा था कि तुम भगवान के राज्य की कामना करते हो और वह भी भगवान के ही बिना |

भगवत गीता के पांचवे अध्याय में भगवान स्वयं कहते हैं मैं समस्त लोगों का स्वामी हूं अर्थात में सबका मित्र हूं अर्थात जो भी मुझे अच्छी तरह से जान लेता है शांति प्राप्त करता है और यही शांति का सूत्र है तथा शांति को प्राप्त करने के द्वार की सही एकमात्र कुंजी भी है |